International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-8

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और भू-राजनीतिः "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" एवं "नेवर्हुड फर्स्ट पॉलिसी" के परिप्रेक्ष्य में भारत-बांग्लादेश सम्बंधों का रणनीतिक पुनर्मूल्यांकन

Manoj Kumar[1], Anupam Kumar[2], Dr. Rakesh Kumar Jaiswal[3]
[1]Research Scholar in Political Science, Deptt of Political Science, Government Degree College Baduan, MJPRU, Bareilly
[2]Research Scholar in Political Science, Deptt of Political Science, Damyanti Raj Anand Government Degree College, Bisauli, Badaun, MJPRU, Bareilly
[3]Asst Prof. Deptt of Political Science, Government Degree College Baduan, MJPRU, Bareilly

सारांशः अंतर्राष्ट्रीय संबंध और भू राजनीति, आधुनिक वैश्विक व्यवस्था को समझने के लिए दो प्रमुख अध्ययन क्षेत्र हैं। अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं भू राजनीति दो अलग-अलग विस्तृत विषय हैं। जिनको विस्तार पूर्वक पढ़ा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंध के तहत हम किसी राष्ट्र के आंतरिक तथा बाह्य संस्थाओं, राजनीतिक संरचनाओं एवं विद्यमान नौकरशाही व्यवस्था तथा वैश्विक कारकों के बीच के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामरिक संबंधों का विस्तार सहित अध्ययन करते हैं। वही भू राजनीति के तहत उस राष्ट्र के भौगोलिक तत्वों, जलवायु तथा प्राकृतिक संसाधनों की शक्ति, सुरक्षा और रणनीति का विश्लेषण करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय संबंध और भू-राजनीति के परिप्रेक्ष्य में भारत और बांग्लादेश के संबंध दक्षिण एशिया में स्थिरता, सुरक्षा और आर्थिक सहयोग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भौगोलिक निकटता, ऐतिहासिक संबंध और सामरिक हित दोनों देशों के रिश्तों को विशेष महत्व देते हैं। इस शोध पत्र के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य दोनों अवधारणा (अंतर्राष्ट्रीय संबंध और भू राजनीति) को "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" एवं "नेवर्हुड फर्स्ट पॉलिसी" के तहत भारत तथा बांग्लादेश संबंधों को अच्छे से समझना है और इन सिद्धांत का विस्तार कैसे हुआ, उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है? सैद्धांतिक आधार क्या है? तथा साथ ही साथ भारत-बाग्लादेश के भू राजनीतिक संबंधों के प्रभावों का भी अध्ययन करेंगे। जिसके अंतर्गत भारत-बांग्लादेश के पारस्परिक सामरिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंधों को देखेंगे और समकालीन समय में इस विषय की क्या प्रासंगिकता है? जैसे मुद्दों को शामिल करके उनका हल निकाला जाएगा।

मुख्य शब्द :- भू राजनीति, भारत-बांग्लादेश संबंध, एक्ट ईस्ट पॉलिसी, नेवर्हुड फर्स्ट पॉलिसी, यथार्थवाद, शक्ति संतुलन

I. प्रस्तावना

वर्तमान दौर बदलाव का समय है यहां कोई शाश्वत दुश्मन नहीं है, न सदा बना रहने वाला मित्र। परिवर्तन समय की मांग है। जो इस बदलते हुए दौर में खुद को स्थापित कर लेगा वही पूरी दुनिया पर राज करेगा। अंतर्राष्ट्रीय संबंध में यह कहावत बहुत प्रचलित है कि हमारे संबंध वहां तक हैं जहां तक किसी राष्ट्र के साथ जब तक हमारे आपसी हितों की पूर्ति होती रहती है। अब विश्व एक ध्रुवीय नहीं बल्कि बहू ध्रुवीय है, जिससे आज हर राष्ट्र की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने महत्व तथा दायित्व को अच्छी तरह से समझे आज विश्व केवल प्राकृतिक संसाधनों अर्थव्यवस्था एवं ऊर्जा तक सीमित नहीं बल्कि इन सभी से आगे बढ़कर दूसरे राष्ट्र की सुरक्षा शांति एवं संपन्नता का भी ख्याल रखें जिससे पूरा विश्व सुखी एवं समृद्ध बने। 21वीं सदी में विश्व

राजनीति बहुआयामी एवं जटिल होती जा रही है। वैश्वीकरण, क्षेत्रीय संघर्ष, महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा तथा उभरती शक्तियों के उदय ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और भू राजनीति को अत्यधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ, नाटो और विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाओं की भूमिका वैश्विक शासन में महत्वपूर्ण हो गई है।

राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करने के लिए ही प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ संबंध बनाता है। मधुर संबंध बनाकर उनको सुचारू रूप से संचालित करना भी दोनो राष्ट्रों की जिम्मेदारी भी है, यही संबंधों की विशेष बात होती है। किसी देश के संबंध कितने दिनों तक निकटता के साथ रहेंगे उसके भू राजनीति का भी बड़ा महत्व है। क्योंकि यदि कोई राष्ट्र अपनी स्थिति को संकट काल बचाये नहीं रख पाता तो कोई भी राष्ट्र उसके साथ संबंध नहीं बनायेगा। जैसे वर्तमान में रूस-यूक्रेन युद्ध तथा हाल ही में भारत और बांग्लादेश के संबंधों में उतार चढाव देखने को मिला। जब बांग्लादेश की जनता ने ही शेख हसीना सरकार की आलोचना की।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और भू-राजनीति के परिप्रेक्ष्य में भारत और बांग्लादेश के संबंध दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय स्थिरता, सुरक्षा और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और रणनीतिक संबंध गहरे हैं, जो उन्हें प्राकृतिक साझेदार बनाते हैं। 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' तथा 'नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी' के संदर्भ में बांग्लादेश की भूमिका केंद्रीय है। इस परिप्रेक्ष्य में बांग्लादेश, भारत के लिए केवल एक पड़ोसी नहीं, बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया तक पहुंचने का एक "रणनीतिक गलियारा" है। यद्यपि तीस्ता और चीन जैसे कारक चुनौतियां पेश करते हैं, लेकिन भौगोलिक स्थिति, साझा इतिहास और आर्थिक अंतर्निर्भरता के कारण दोनों देशों का भविष्य एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। 2026 की चुनौतियों के बीच, भारत को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि छोटे मतभेद व्यापक रणनीतिक साझेदारी को प्रभावित न करें। यदि बांग्लादेश के साथ कनेक्टिविटी और व्यापार परियोजनाओं को समय पर पूरा किया जाता है, तो यह पूर्वोत्तर भारत के आर्थिक विकास और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ एकीकरण के लिए गेम-चेंजर साबित हो सकता है।

II. शोध का उद्देश्य

- भू राजनीति का अंतर्राष्ट्रीय संबंध में महत्व (भारत-बांग्लादेश की राजनीति को ध्यान में रखकर)
- "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" एवं "नेवर्हुड फर्स्ट पॉलिसी" का भारत-बांग्लादेश संबंधों के सन्दर्भ में विश्लेषण
- वैश्विक शक्ति संतुलन स्थापित करने में भू राजनीति की उपयोगिता का आकलन
- भू राजनीति तथा क्षेत्रीय सुरक्षा के समाधान को खोजना

अंतर्राष्ट्रीय संबंध: अंतर्राष्ट्रीय संबंध वह अध्ययन क्षेत्र है जो राज्यों के अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा गैर राज्य संस्थाओं के बीच संबंधों का विश्लेषण करता है। इसके तहत आपसी संबंधों का अध्ययन किया जाता है। विभिन्न संगठनों तथा संस्थाओं की जानकारी प्राप्त होती है। अंतर्राष्ट्रीय संबंध की अवधारणा 20वीं सदी में प्रमुख रूप से विचारधारा उभर कर आई जिसने पूरी वैश्विक व्यवस्था को हिला कर रख दिया। प्रथम विश्व युद्ध तथा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक नया मोड़ आया जिसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देशों को यह सोचने में मजबूर कर दिया कि विश्व स्तर पर राष्ट्रीय हित के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन होने चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को निम्न सिद्धांतों के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है। कुछ राष्ट्र अपनी विदेश

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-8

नीति में यथार्थवादी सिद्धांत पर ध्यान देते हैं तो वहीं कुछ राजनेता अपनी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में उदारवादी या आदर्शवादी विचारधारा का प्रयोग करते हैं। यथार्थवाद विचारधारा के तहत राज्य शक्ति प्राप्त करना चाहते वही आदर्शवादी विचारधारा के तहत राज्य नैतिकता एवं आदर्श को महत्व देता है। इन समस्त सिद्धांतों का प्रयोग करके किसी देश की अंतर्राष्ट्रीय हितों की पूर्ति होती है | जिससे देश का आपसी कल्याण होता है।

भू राजनीति: यह शब्द मूल रूप से स्वीडिश राजनीतिक वैज्ञानिक रुडोल्फ केजेलन द्वारा 20वीं शताब्दी के आरंभ में gadha गया था। प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध 1918-39 के बीच की अवधि में इसका उपयोग पूरे यूरोप में फैल गया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह शब्द पूरे विश्व में विस्तार पूर्ण प्रयोग हुआ। कार्ल हौसहोफर द्वारा सिद्धांत की व्याख्या से स्पष्ट है कि भू राजनीति के विचार का उपयोग विदेश नीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को उचित ठहरने के लिए किया जाता है। भू राजनीति के अंतर्गत भूगोल अर्थशास्त्र और जनसंख्या का राजनीति एवं विदेश नीति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

भू राजनीति इस बात का विशेष विश्लेषण करता है कि जलवायु, भूमि और समुद्री संसाधनों तक पहुंच जैसे तत्व राजनीति संबंधों को कैसे प्रभावित करते हैं। इस विचारधारा से यह समझने में मदद मिलती है कि परिवहन संचार और प्रौद्योगिकी किस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय प्रणालियों और राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा को आकर देती है। कुछ भू राजनीतिक सिद्धांतों में हेल्फोर्ड मैकिंडर का "हॉटलैंड सिद्धांत", निकोलस स्पाइकमैन का "रिमलैंड सिद्धांत" और कार्ल का "पैन-रीजन सिद्धांत" शामिल है। प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान के समय यह विचारधारा बहुत लोकप्रिय हुई।

भू राजनीति का अंतर्राष्ट्रीय संबंध पर प्रभाव

जैसा कि पहले बताया गया है, वैश्वीकरण के इस दौर में भू राजनीति अर्थात भौगोलिक आवश्यकता पर आधारित विदेश नीति का संबंध अधिकांश राजनीतिक संस्थाओं के लिए अनिवार्य हैं। भू राजनीति के कट्टरपंथी दृष्टिकोण द्वारा सुझाई गई राजनीति, राजनीतिक क्षेत्रीयता की कमी अंतर सरकारी संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय संधियों, सुरक्षा संबंधों और पारस्परिक सहयोग संस्थाओं को जन्म देती है। उदाहरण में नाटो, दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान), ओपेक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व स्वास्थ्य संगठन शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक संगठन और संस्था समय की कसौटी पर खरी उतरी है और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि लगातार बदलते वैश्विक समय की मांगों को पूरा करने में सक्षम साबित हुई है।

फिर भी अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की पूर्णता सहजीवी और शांतिपूर्ण रूप में चित्रित नहीं किया जा सकता। राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने प्रथम विश्व युद्ध के बाद उभरते अंतर्राष्ट्रीय परिवेश को जो नई ऊर्जा दी है उसे अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की प्रतिस्पर्धा प्रवृत्ति के संदर्भ में देखा जा सकता है। अंततः भू राजनीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को विकसित एवं प्रसार करने में महत्वपूर्ण है। भू राजनीति को एक प्रेरक तत्व माना जा सकता है जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को संचालित करता है। भू राजनीतिक संबंध में नई ऊर्जा का संचार करता है। संबंधों को नई ऊंचाई प्रदान करता है। भू राजनीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की पूरी वैश्विक व्यवस्था को प्रभावित करती है।

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-8

भू राजनीतिक अवधारणा के फायदे

20वीं शताब्दी के मध्य में जब शीत युद्ध की शुरुआत हुई उसे समय विश्व एक ध्रुवीय तथा उस समय अमेरिका की प्रभुत्ता थी लेकिन जैसा-जैसे समय आगे बीतता गया विश्व एक ध्रुवीय से बहुध्रुवीय हो गया जिसमें अन्य अर्थात तीसरे विश्व के देश का भी महत्व बड़ा। आज भू राजनीति प्रभुत्व के कारण दक्षिण एशिया में भारत तथा चीन भी अपना विश्व में महत्व रखते है। आज संयुक्त राष्ट्र संघ, चीन, भारत तथा रूस जैसी महाशक्तियां उभर रही हैं। वैश्विक राजनीति में सीमाएं, समुद्री संसाधन तथा ऊर्जा एवं प्राकृतिक वस्तुओं का अपना खासा महत्व होता है। जिस देश में यह सारे संसाधन पाए जाते हैं वह आज भू राजनीतिक रूप से पूरे वैश्विक समुदाय को प्रभावित करता है।

जैसे एशिया में हिंद प्रशांत क्षेत्र का विशेष महत्व है, जिससे भारत तथा चीन वैश्विक व्यापार को प्रभावित कर सकते हैं एवं सामरिक दृष्टि से भी मजबूती हासिल कर सकते हैं। भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" तथा चीन की "बेल्ट एण्ड रोड इनीशिएटिव" के माध्यम से ऐसा करता है। भू राजनीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को हर स्तर पर प्रभावित करती है।

भारत-बांग्लादेश के भू राजनीतिक संबंध

दुनिया के अधिकतर देश ब्रिटिश सरकार के उपनिवेश रहे हैं। भारत भी ब्रिटिश सरकार का एक उपनिवेश रहा था। 1947 में भारत को आजादी मिली जो दो राष्ट्रों (भारत एवं पाकिस्तान) के रूप में स्वतंत्र हुए। भारत एवं पाकिस्तान दो देश सम्प्रभु बने जिसमें पूर्वी पाकिस्तान एवं पश्चिमी पाकिस्तान के रूप में उदित हुए। पूर्वी पाकिस्तान जिसमें बंगाली बहुल क्षेत्र था जो की आजादी से पूर्व पश्चिम बंगाल का एक हिस्सा था। पश्चिमी पाकिस्तान एवं पूर्वी पाकिस्तान (जो वर्तमान में बांग्लादेश है) बांग्लादेश की आजादी में भारत का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। 1969 में पश्चिमी पाकिस्तान में सेना का शासन आया तथा पूर्वी पाकिस्तान के लोगों को ज्यादा सताया जाने लगा तभी भारत ने बांग्लादेश की आजादी के लिए लड़ने वाली मुक्तिवाहिनी के जवानों को प्रशिक्षण एवं हथियारों की व्यवस्था की साथ ही एक करोड़ शरणार्थियों का भरण पोषण भी किया।

दोनों देशों के संबंधों की नींव 1971 में पड़ी जब बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान भारत ने बांग्लादेश की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 21वीं सदी में यह संबंध राजनीतिक विश्वास और सहयोग के आधार पर और मजबूत हुए हैं।भारत पहला देश था जिसने बांग्लादेश को स्थाई सरकार बनाने से पहले ही स्थाई सरकार की मान्यता दे दी है। 5 दिसंबर 1971 को बांग्लादेश के लिए भारत द्वारा मान्यता दी गई। इसके साथ 10 दिसंबर 1971 को भारत ने बांग्लादेश के तत्कालीन कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप एक साथ समझौता किया जिसके आधार पर भारतीय सेवा व मुक्तिवाहिनी की संयुक्त कमान बनाकर बांग्लादेश को पूर्ण आजादी दिलाई गई।

आजादी के बाद से ही भारत, बांग्लादेश के साथ भू राजनीतिक संबंधों में मधुरता लाने की कोशिश में रहा है। भारत-बांग्लादेश के भू राजनीतिक संबंध की पहली कडी़ उसकी भौगोलिक निकटता है। भारत की बांग्लादेश के साथ सबसे लम्बी सीमा रेखा (4096 KM) लगती है। भारत की विदेश नीति में "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" और "नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी" दोनों बहुत महत्वपूर्ण हैं, और इन दोनों में बांग्लादेश की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी जाती है। "एक्ट ईस्ट

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-8

पॉलिसी" भारत को पूर्वी और दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ती है, जबकि "नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी" पड़ोसी देशों के साथ मजबूत संबंधों पर जोर देती है। भारत के भू-राजनीतिक सन्दर्भ में बांग्लादेश एक रणनीतिक सेतु (Strategic Bridge) की भूमिका निभाता है। वर्तमान में दोनों देशों के बीच राजनीतिक और कूटनीतिक संबंध मजबूत हुए।

भारत-बांग्लादेश संबंधों का भू-राजनीतिक महत्व

- पूर्वोत्तर भारत की कनेक्टिविटी- बांग्लादेश के माध्यम से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों का परिवहन और व्यापार आसान होता है।
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक सहयोग- चीन के बढ़ते प्रभाव के बीच भारत-बांग्लादेश सहयोग क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।
- क्षेत्रीय संगठनों में सहयोग- दोनों देश South Asian Association for Regional Cooperation (SAARC) और Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation (BIMSTEC) के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग बढ़ा रहे हैं।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी (Act East Policy)

एक्ट ईस्ट पॉलिसी, भारत द्वारा पूर्वी एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ आर्थिक, सामरिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए अपनाई गई है। इसे वर्ष 2014 की तत्कालीन सरकार ने "Look East Policy" को आगे बढ़ाते हुए शुरू किया। इसका उद्देश्य ASEAN देशों, जापान, दक्षिण कोरिया आदि के साथ सहयोग बढ़ाना है। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ना भी इसका मुख्य लक्ष्य है।

नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (Neighbourhood First Policy)

"नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी" (पड़ोसी पहले नीति), भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो द्विपक्षीय संबंधों, कनेक्टिविटी, और ऊर्जा सहयोग (जैसे मैत्री पाइपलाइन) के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता और विकास को बढ़ावा देता है। नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के अंतर्गत भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सुरक्षा सहयोग को प्राथमिकता देता है। यह नीति विशेष रूप से नरेंद्र मोदी सरकार के समय अधिक सक्रिय रूप से लागू की गई, जिसमें भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सुरक्षा संबंधों को मजबूत करने पर जोर दिया। भारत-बांग्लादेश संबंध इस नीति का सबसे सफल उदाहरण माने जाते हैं। इस नीति में बांग्लादेश, भारत का सबसे महत्वपूर्ण साझेदार माना जाता है। यह नीति साझा इतिहास, सांस्कृतिक संबंध और 4096 किमी से अधिक की लंबी सीमा के माध्यम से दोनों देशों को जोड़ती है।

दोनों नीतियों का संयुक्त महत्व (भारत-बांग्लादेश संदर्भ)

21वीं सदी में भारत-बांग्लादेश संबंध केवल द्विपक्षीय सहयोग तक सीमित नहीं हैं, बल्कि दक्षिण एशिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र की भू-राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आर्थिक सहयोग, कनेक्टिविटी, ऊर्जा और सुरक्षा साझेदारी को मजबूत करके दोनों देश क्षेत्रीय स्थिरता और विकास को आगे बढ़ा सकते हैं। भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" एवं "नेवर्हुड फर्स्ट पॉलिसी" ने दोनों देशों में आर्थिक संबंधों को मजबूती प्रदान की है। बांग्लादेश के साथ भारत के

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-8

सामरिक तथा राजनीतिक संबंधों में निकटता आई साथ ही साथ दोनों देशों के व्यापार एवं वाणिज्यक संबंध भी बेहतर हुए हैं। बांग्लादेश की भारत से निकटता के कारण आपसी सुरक्षा और शांति बहाली मे मदद मिलती है। पूर्वोत्तर राज्यों की सुरक्षा और शांति बहाली के संपर्क बनाने में बहुत लोकप्रिय साबित हुआ है।

भारत और बांग्लादेश के संबंध इन दोनों नीतियों को जोड़ते हैं। बांग्लादेश भारत के लिए दक्षिण-पूर्व एशिया तक पहुंच का मार्ग है। कनेक्टिविटी, व्यापार और सुरक्षा सहयोग को मजबूत करता है। उत्तर-पूर्व भारत के आर्थिक विकास में मदद करता है। क्षेत्रीय संगठन जैसे Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation (BIMSTEC), South Asian Association for Regional Cooperation (SAARC) में सहयोग बढ़ाता है।

भारत-बांग्लादेश के भू राजनीतिक संबंधों में अनेक चुनौतियां तथा संभावने भी हैं -
प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार हैं-
- सीमा पर अवैध प्रवासन और तस्करी की चुनौतियां,
- जल विवाद (विशेषकर तीस्ता नदी जल बंटवारा),
- क्षेत्र में चीन का बढ़ता प्रभाव,
-

प्रमुख संभावनाएं इस प्रकार हैं-
- ब्लू इकोनमी को बढावा मिला,
- डिजिटल और हरित ऊर्जा में साझेदारी,
- क्षेत्रीय संघर्ष को बढ़ावा मिलेगा;

इस तरह शोध पत्र में भारत-बांग्लादेश के भू राजनीतिक संबंधों के अंतर्गत ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं समकालीन विश्लेषण प्रस्तुत करने का तथा इससे भविष्य की चिंताओं के समाधान खोजने का प्रयास किया गया है।

वर्तमान भू-राजनीति में "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" एवं "नेवर्हुड फर्स्ट पॉलिसी" की प्रासंगिकता

आज के समय में अंतर्राष्ट्रीय संबंध और भू राजनीति का महत्व पहले से कहीं अधिक हो गया है। वर्तमान में वैश्विक अर्थव्यवस्था तकनीक और राष्ट्रीय सुरक्षा अब किसी एक देश की सीमाओं तक सीमित नहीं रह गई बल्कि हर देश का यह दायित्व है कि वह अपनी सुरक्षा आर्थिक जरूरत की पूर्ति संसाधनों का अच्छे से उपयोग कर सके। जब कोविड-19 एवं रूस यूक्रेन युद्ध हुआ तब यह महसूस हुआ कि दुनिया अलग-अलग नहीं बल्कि हमें एक होकर कार्य करना चाहिए। हमारे संसाधन सीमित हैं और हमें मिलजुल कर इन संसाधनों का उपयोग करना होगा; हमारे लिए हरित ऊर्जा तथा तकनीक का ज्ञान का उपयोग करके जलवायु परिवर्तन से बचना चाहिए जोकि पूरी दुनिया इस कदम में आगे बढ़कर हिस्सा ले। अंतर्राष्ट्रीय मंचों जैसे कि G-20, ब्रिक्स तथा QUAD जैसे मंचों के शीर्ष नेताओं का सम्मेलन निरंतर चलता रहता है जिस कारण भू राजनीतिक संतुलन चक्र बना है। आज इस अवधारणा की प्रासंगिकता इसी में है कि सभी राष्ट्र, एक साथ आगे बड़े जिससे कोई भी कमजोर कड़ी ना बचे।

III. निष्कर्ष

निष्कर्षित यह कहा जा सकता है कि भू-राजनीतिक दृष्टि से भारत-बांग्लादेश संबंध दक्षिण एशिया की स्थिरता और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आर्थिक सहयोग, कनेक्टिविटी, सुरक्षा और सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से दोनों देश क्षेत्रीय साझेदारी को मजबूत कर रहे हैं। भविष्य में विश्वास और सहयोग बढ़ाकर यह संबंध दक्षिण एशिया की शांति और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। 21वीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध और भू-राजनीति के परिप्रेक्ष्य में भारत और बांग्लादेश के संबंध दक्षिण एशिया की राजनीति, सुरक्षा और आर्थिक सहयोग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं। बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन, क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और समुद्री रणनीति के कारण दोनों देशों की साझेदारी और अधिक प्रासंगिक हो गई है। “एक्ट ईस्ट पॉलिसी” और “नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी” दोनों मिलकर भारत की क्षेत्रीय कूटनीति को मजबूत करती हैं। बांग्लादेश इन दोनों नीतियों का केन्द्रीय भाग है, क्योंकि यह भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने वाला रणनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सेतु है। भविष्य में कनेक्टिविटी, व्यापार और सुरक्षा सहयोग बढ़ाकर दोनों देश क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि को आगे बढ़ा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. Hans. J. Morgenthau (1948). Politics Among Nations.
2. Kenneth Waltz (1979). Theory of International Politics.
3. United Nation की आधिकारिक रिपोर्ट, 2022-23
4. Ministry of External Affairs, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट, 2024-25
5. Mamadouh,V, & Dijkink, G.(2006). Geopolitics, international relations and political geography: the Politics of geopolitical discourse, Geopolitics, 349-66.
6. Eriksson, J, & Giacomello, G. (Eds) (2007). International relations and security in the digital age (vol.52). London : Routledge.
7. Basu, R. (2018) . India-Bangladesh Relation : Contemporary Issues.
8. Datta, S. (2019) . Subregional Cooperation in South Asia.Malik, K., et al. (2023). Feasibility and acceptability of a remote stepped care mental health programme for adolescents during COVID-19 in India. International Journal of Environmental Research and Public Health, 20(3), 1722. https:/
9. /www.mdpi.com/1660-4601/20/3/1722
10. Ministry of Education, Government of India. (2020). Manodarpan (psychosocial support) document (PDF). https:
11. //www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Manodarpan-merged_0.pdf
12. NCERT. (n.d.). Manodarpan initiative page. https://ncert.nic.in/manodarpan.php
13. National Medical Journal of India. (2025). Substance use among school-going adolescents in India: Results from a nationwide survey. https: //nmji.in/substance-use-among-school-going-adolescents-in-india-results-from-a-nationwide-survey/
14. Office of the High Commissioner for Human Rights. (n.d.). Convention on the Rights of Persons with Disabilities. https:/

/www.ohchr.org/en/instruments-mechanisms/instruments/convention-rights-persons-disabilities
15. Social Development (UN DESA). (n.d.). CRPD Article 24: Education summary page. https:/ /social.desa.un.org/issues/disability/crpd/article-24-education
16. Telemedicine Practice Guidelines (India). (2020). Telemedicine Practice Guidelines (PDF). https: //esanjeevani.mohfw.gov.in/assets/guidelines/Telemedicine_Practice_Guidelines.pdf
17. Tele-MANAS (MoHFW, Government of India). (2022). Facilitator's Manual for Trainers of Tele-MANAS Counsellors (Edition 1) (PDF). https: //mohfw.gov.in/sites/default/files/Facilitator%27s%20Manual%20for%20Trainers%20of%20Tele%20MANAS%20Counsellors%20Edition%201%20Final%2014.12.22.pdf